5-6-67

... जिनको रचता कहा जाता है। किसको रचता? नई दुनियां का रचता। नई दुनियां को कहा जाता है स्वर्ग। वो सुखधाम। भल सुखधाम नाम कहते रहते है परन्तु समझते नही है। कृष्ण के मन्दिर को भी सुख धाम कहते है। अब वो तो हो गया छोटा मन्दिर। कृष्ण तो विश्व का मालिक था। बेहद के मालिक को जैसे कि हद का मालिक बना देते है। कृष्ण के छोटे से मन्दिर को सुखधाम कह देते है। बुधी मे नही आता है कि वो तो विश्व का मालिक था। भारत ही मे रहने वाला था। कितना फ़र्क है। तुमको भी पहले कुछ पता नही था। बाप को तो सब कुछ पता है। वो सृष्टी की आदि-मध्य-अन्त को जानते है। अब तो तुम बच्चे भी जानते हो। दुनियां में यह भी कोई को पता नही है कि ब्र, वि, शं कौन है। शिव तो है ऊंच ते ऊंच भगवान। अच्छा फिर प्रजापिता ब्रहमा कहां से आया? है तो मनुष्य ही नां। प्रजापिता ब्रहमा तो जरुर यही चाहिये नां। जिससे ब्राहमण पैदा हो। प्रजापिता माना ही मुख से ऐडाप्ट करने वाला। तुम हो मुखवंशावली। अब तुम जानते हो कि कैसे ब्रहमा को बाप ने अपना बना कर मुखवंशावली बनाई। इनमे प्रवेश भीकिया फिर कहा कि यह हमारा बच्चा भी है। तुमको मालूम पडा कि ब्रहमा कहां से नाम पडा। कैसे पैदा हुआ कुछ भी नही जानते है। सिर्फ महिमा ही गाते है कि परमपिता परमात्मा ऊंच ते ऊंच है। परन्तु यह कोई की बुधी मे नही आता है कि ऊंच ते ऊंच बाप है। वो हम सब आत्माओं का पिता है। वो भी बिन्दु रुप ही है। उनकी बुधी मे सृष्टी की आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। अब तुमको भी नालेज मिली है। आगे यह ज्ञान जरा भी नही था। मनुष्य सिर्फ कहते रहते है कि ब्र, वि, शं परन्तु जानते नही है तो यह उन्ही को तो समझना है नां। नही जानते है तो उनको ही तो बेसमझ कहा जाता है नां। अब तुम समझदार बने हो। जानते हो कि बाप ज्ञान का सागर है। हमको भी ज्ञान सुनाते है। पढाते है। सारी दुनियां समझती है कि कृष्ण पढ़ाते है। क्या पढाते है? गीता। समझते है गीता से राजयोग सिखाया राजयोग के लिये तो फिर विनाश भी जरुर चाहिये। क्योंकि राजयोग है ही सतयुग के लिये। जरुर पुरानी दुनियां का विनाश चाहिये। उसके लिये यह महाभारत लडाई है। आधा कल्प से लेकर तुम भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते आये हो। अब तो बाप से सुनते हो। बाप कोई शास्त्र नही बैठ कर सुनाते। वो सब है भक्ति मार्ग के। भक्ति जो करते है वो भी शास्त्रो मे मूंझे है। जो भक्ति मे है उनको ज्ञान का पता नही हो सकता। वो सब ठहरी भक्ति। जप तप करना शास्त्र आद पढ़ना सब भक्ति है! सभी भक्तो को भक्ति का फल चाहिये। क्योंकि मेहनत ही करते है भगवान से मिलने के लिये। परन्तु भक्ति से कोई को भगवान मिल नही सकता। हाँ जब खुद भगवान आकर अपना परिचय देवे तब भक्ति को छोड कर ज्ञान लेंवें। ज्ञान से सदगति भक्ति से दुरगति। वो दोनो इकठे तो चल नही सकते। अभी तो है ही भक्ति का राज्य। सभी भक्ति है। हर एक के मुख से ओ गाड फादर जरुरनिकलेगा। अब तुम बच्चे जानते हो कि बाप ने अपना परिचय दिया है कि मै भी छोटी बिन्दी हूं। मुझे ही ज्ञान सागर कहते है। मुझ बिन्दी ही मे सारा ज्ञान भरा हुआ है। कोई भी विद्वान आचार्य आद की बुधी मे यह नही है। आत्मा मे ही नालेज रहती है। अभी तुम बच्चें समझते हो कि उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। वो है सुप्रीम सोल। सुप्रीम अर्थात सबसे ऊंच ते ऊंच। पतित पावन बाप ही सुप्रीम है नां। मनुष्य है भगवान कहेंगे तो शिव लिंग ही याद पड़ेगा। वो भी यथार्थ रीती से नही। एक जैसे कि आदत पड गई है कि भगवान को याद करना है। भगवान ही सुख दुःख देता है। ऐसा कह देते है। अभी तुम ऐसे नही कहेंगें। अब तुम जानते हो कि सतयुग मे सुखधाम था। दुःख का तो नाम नहीथा। कलियुग मे है ही दुःखधाम। सुख का नाम भी नही है। ऊंच ते ऊंच भगवान। वो तो सबआत्माओं का बाप है। शरीर के बाप को तो सभी जानते ही है। परन्तु यह किसीको भी पता नहीं कि आत्माओं का बाबा भी है। कहते भी है कि हम सब ब्रदंस है। तो जरुरी है कि सब एक बाप के बच्चे ठहरे नां। बीच मे कोई कह देते है कि वो तो सर्व-

व्यापी है। तेरे में है मेरे मे है। और तुम आत्मा हो यह तो तुम्हारा शरीर है। फिर तीसरी चीज हो सकती है। आत्मा को परमात्मा थोडेई कहेंगे। जीवात्मा कहा जाता है। जीव परमात्मा नही कहा जाता है। फिर परमात्मा सर्वव्यापी भला कैसे हो सकता है? वो सर्वव्यापी होता तो फिर फादर हुडहो जावे। फादर को फादर ही से वर्सा काहे का मिलेगा? बाप से तो बच्चा ही वर्सा लेता है। सभी ही फादर तो फिर बाबा किनको कहें। इतनी छोटी सी बात भी कोई की समझमे नही आती है। तब बाप कहते है कि कितने बेसमझ बन गये है। हम तुमको आज से 5000 वर्ष पहले कितना समझदार बना कर गये थे। हेल्दी वेल्दी समझदार। इससे जास्ती समझदार कोई हो नही सकता। अब तुमको जो समझ मिलती है वो वहां नही रहेगी। वहां यह थोडेई मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगे। यह पता हो तो फिर सुख की भासना ही नही आवे। यह ज्ञान फिर प्रायःलोप हो जाता है। यह सिर्फ अभी तुम्हारी बुधी मे है। ब्राह्मण ही अधिकारी रहते है। तुम्हारी बुधी मे है कि अभी हम ब्राह्मण वर्ण के है। ब्राह्मण ही निमित बनते है। ज्ञान ब्राह्मणों को ही सुनाते है। ब्राह्मण हीफिर सबको सुनाते है। गायन भी है कि भगवान ने आकर स्वर्ग की स्थापना की थी। राजयोगसिखाया था। ऊंच ते ऊंच बाप ने क्या आकर सिखाया वो तुम जानते हो। और सभी के लिये तो जानते है। कृष्ण जयन्ति भी बनाते है। समझते है कि वो तो वैकुण्ठ का मालिक था। वो विश्व भर का मालिक था वो बुधीमे नही आता है। जब उनका राज्य था तो और कोई धर्म नही था। ~~उनके~~ उनका ही सारे विश्व पर राज्य था और गंगा के किनारे था। अब तुमको यह कौन समझा रहे है? भगवानोवाच। बाकी वो सब तो भक्ति मार्ग के ही शास्त्र आद सुनाते है। यहां तो खुद भगवान सुना रहे है। अभी तुम समझते हो कि हम पुरुषोत्तम बन रहे है। सारी दुनियां घोरअन्धेरे मे है। गाया भी जाता है कि ज्ञान सूर्य प्रगटया अज्ञान अन्धेरा विनाश। तुम अर्थ को जानते हो। वो लोग तो जो बोलते है सो ही अनर्थ। उल्टा ही समझाते रहते है। ओम का अर्थ कितना लम्बा कर दिया है। ओम अर्थात अहम आत्मा। मम शरीर। आत्मा परमधाम की रहने वाली है। वो दूर देश से आते है नां। उसको निराकारी दुनियां कहा जाता है। तुमको ही यह बुधी मे है कि हम शान्ति धाम के रहने वाले है। फिर हम आकर 21जन्मों की प्रारब्ध पावेंगे। तुमको तो कितनी खुशी होनी चाहिये। घड़ी-2 अन्दर मे होनी चाहिये। बेहद का बाप शिव बाबा हमको पढा रहे है। वो ह ज्ञान का सागर है। सृष्टी की आदि मध्य अन्त को जानते है। बाप को याद करते है तो जो बाप आये थे। जयन्ति भी मनाते है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। तो कितनी खुशी रहनी चाहिये कि हमको भगवान पढाते है। कहते है बाबा हमने आपको अपना वारस भी बनाया है। बच्चा बनाया है। बाप बच्चों पर वारी जाते है। बच्चे फिर कहते है कि भगवान आप जब आवेंगे तब हम आप पर वारी जावेंगे अर्थात बच्चा बन जावेंगे। यह भी अपना बच्चों को हो वारस बनाते है। बाबा कैसे वारस बनावेंगे यह भी गुह्य बात है नां। अपना सब कुछ ऐक्सचेंज करना इसमे बुधी का काम है। गरीब तो झट ऐक्सचेंज कर देंगे। शाहुकार मुशकल ही करेंगे। जब तक कि पुरी रीती ज्ञान नही उठावें। इतनी हिम्मत नही रहती है। गरीबतो झट कह देते है कि बाबा हम तो आपको ही वारस बनावेंगे। हम पास रखा ही क्या है। वारस बना कर फिर शरीर निर्वाह भी अपना करना है। युक्तियांबहुत बताते है। बाप तो सिर्फ देखते है कि कोई पापकर्म मे तो पैसे खराबनही करते है। मनुष्य को पुण्यात्मा बनाने मे पैसे लगाते है। सर्विस भी कायदे सिर करते है? यह पुरी जाँच करेंगे। कितना निकाल सकते है वो सब राय देंगे। धन्धे मे ईश्वर अर्थ निकालते थे नां। वो तो था इन डोयरेक्ट। अभी तो बाप डोयरेक्ट आये है। मनुष्य समझते है कि हम जो कुछ करते है उनका फल दुसरे जन्म मे ईश्वर देते है। कोई गरीब दुःखी है तो समझेंगे इस जन्म का कर्म ही ऐसा या हुआ है। अच्छे कर्म किये है तो सुखी है। अभी कर्मो की गति बाप बैठ समझाते है। रावण राज्य मे तुम्हारे कर्म सभी विकर्म हो जाते है। अच्छे कर्मो का करके अल्प-

...के लिए सुख मिलता है। ऐसे नही कि सारी लाईफ भर ही कोई हैल्थ वैल्थ रहती है। नही कोई नां कोई रोग खिटपिट जरूर होगी। क्योंकि अल्प काल का सुख है। अभी बाप कहते है कि मै डायरेक्ट आया हूं। अभी यह रावण राज्य ही खलास होना है। रावण राज्य ही अलग है। राम राज्य अलग है। राम राज्य को अब शिव बाबा स्थापन कर रहे है। बाकी शास्त्रो मे जो यह बाते लिख दी है कि राम की सीता चुराई गई। यह हुआ। ऐसी कोई बात है नही। वहां तो दुःख का नाम नही होता। कहते भी हैराम राजा... तो सीता भी तो राम के साथ ही आ गई नां। वहां पर फिर अधम की बात हो ही कैसे सकती है। रामायण ही कितनी लम्बी चौडी वाहयात बातो से भर दी है। सभी वाहयात बाते है। ऐसे किताब पढ़ने से कोई भगवान मिल सकता है क्या। कितनी बाते बनाई है। यह फिर भी बनेगी। बाप कहते है व्यास को कैसे कहां से अक्ल आया जो इतनी लम्बी कहानी बैठ बनाई है। कमाल की बात है रामायण बनाना, अब तुम समझते हो कि वो सब भक्ति मार्ग। ज्ञान तो बिलकुल ही अलग है। भक्ति अलग है। तुम जानते हो कि हम फिर भी भक्ति को पास करेंगे। फिर बाप आकर ज्ञान देंगे। फिर भी भारत हेवन बनेगा। भारत कितना शाहुकार था। अब क्या बन गया है। तुम जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत ही फिर गरीब हो पड़ता है। भारत ही आज से 5000वर्ष पहले स्वर्ग था। इन(ल-न)का राज्य था। पहले बदी इनकी चली। कृष्ण प्रिन्स था फिर शादी की तो राजा बना। नारायण नाम पडा। यह भी तुम तोअभी समझते हो तो तुम्हे वण्डर लगता है। बाबा आप रचता और रचना की नालेज सुनाते हो। आप हमको पढाते हो। बलिहार जावे। हमको तो सिवाय एक बाप के और कोई को भी याद नही करना है। अन्त तक पढ़ना है तो जरूर टीचर को याद करना है। स्कूल मे टीचर को याद करते है नां। उन स्कूलो मे तो कितने टीचर्स होते है। हर एक दर्जे का टीचर अलग। यहां तो एक ही टीचर है। कितना लवली बाप लवलीटीचर है। आगे भक्ति मार्ग मे अन्धश्रधा से याद करते थे। अभी तो डायरेक्ट बाप पढाते है तो कितनी खुशी होनी चाहिये। फिर भी कहते है बाबा भूल जाते है। पता नही हमारी बुधी आपको याद क्यो नही करती है। गाते भी है कि ईश्वर की गत मत न्यारी है। बाबा आपकी मत गत और सदगति की तो बिलकुल ही न्यारी है वण्डरफुल है। ऐसे-2 बाप को याद करना चाहिये। स्त्री अपने पति के गुण गाती है नां। बरा अच्छा बडा मीठा। यह-2 उनकी प्रापर्टी है। अन्दर-2 मे खुश होती रहती है। यह तो पतियों का भी पति है। बापों का बाप है। इनसे कितना हमको सुख मिलता है। और सबसे तो दुःख ही मिलता है। हां टीचर ही से सुख मिलता है क्योंकि पढाई से इनकम होती है। बाकी गुरु से क्या मिलता है। अभी तुम्हारी बुधी मे है कि इन गुरुओं को तो छूना भी नही चाहिये। यह तो दुरगति मे ले जाते है। आजकल तो गुरु की इतनी सेवा करते है जो कि पति की भी नही करते होंगे। पावं धोकर पीते है। जबकि कहते है कि पति ही परमेश्रवर है तो साधुओं के पास जाकर क्या करते है। अभी इस भक्ति मार्ग से अपने को और दुसरो को बचाना है। गुरु हमेशा किया जाता है वानप्रस्थ अवस्था मे। बाप भी कहते है कि मै वानप्रस्थ मे आया हूं। यह भी वानप्रस्थी तो मै भी वानप्रस्थी। यह सब मेरे बच्चे है। बाप टीचर गुरु तीनो ही इकठे है। बाप टीचर भी बनते है तो गुरु बन कर साथ भी ले जाते है। उस एक बाप की ही महिमा है। यह बाते कोई शास्त्रो आदमे नही है। सृष्टी की आदि मध्य अन्त का राज कोई समझा नही सकते। रचता को ही नही जानते है। अब रचता अपनी और रचना की पहचान दे रहे है। बाबा हर बात अच्छी रीती समझाते रहते है। इससे उंची नालेज कोई होती नही है। नां जानने की दरकार ही रहती है। हम सब कुछ जान कर विश्व का मालिक बन जाते है। और जास्ती क्या बनेंगे? बच्चो की बुधी मे यह हो तब खुशी मे रहे और बाप की याद मे रहे। पुण्यात्मा बनने लिये याद मे जरूर रहना है। इसमे ही माया विघ्न डालती है। भूल जाते है। माया के तूफान बहुत आते है। यह भी ड्रामा मे नूंध है। ओम